3.1.2 6 8

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय
Talegaon Dhamdhere

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 54 | अप्रैल-जून 2021 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय
Talegaon Dhamdhere

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

Scanned with CamScanner

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय

नारी-व्यथा की कथा प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/ **डॉ॰ मनोहर आप्पासो जमदाडे** 286
परंपरा तथा आधुनिकता के समन्वयक : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी/ **प्रतिभा झा** 290
मधु काँकरिया के उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' में धर्म व नारी-चेतना/ **रानी देवी** 295
दलित विमर्श : अवधारणा और स्वरूप/ **रविन्द्र कुमार** 299
प्रगतिशील हिंदी कविता में व्यंग्य संरचना/ **रेश्मा एम एल** 303
अमरकांत की कहानियों में मानवमूल्य/ **डॉ॰ सुनीता अवस्थी** 309
समकालीन महिला कथालेखिकाओं के लेखन में स्त्री-परिवेश/ **डॉ॰ दिग्विजय टेंगसे** 316
भारत में लोकतंत्र : दशा एवं दिशा/ **डॉ॰ विजय प्रकाश** 320
उत्तराखंड के अभिशप्त और उपेक्षित वर्ग की गाथा–कगार की आग/ **डॉ॰ मुक्तिनाथ यादव** 327
स्वच्छंदतावाद की अवधारणा और उसकी प्रमुख विशेषताएँ/ **प्राची तिवारी** 332
अनुच्छेद-21 जीवन का अधिकार और आदिवासी कविताएँ/ **डॉ॰ श्रीमती राजु एस॰ बागलकोट** 338
केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकसौंदर्य/ **उमेश कुमार पर्वत** 343
मंगलेश डबराल की काव्य संवेदना/ **डॉ॰ नवनाथ शिंदे** 347
मीराबाई और हिंदी का स्त्री-विमर्श/ **डॉ॰ दीप कुमार मित्तल** 353
बीपीएल परिवारों में रहने वाले वृद्धजनों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का एक अध्ययन/ **डॉ॰ श्याम सिंह, डॉ॰ संजीव कुमार लवानियां** 359
आज के समय की हिंदी कहानी/ **वीरेश कुमार** 366
आदिवासी जीवन और संस्कृति/ **सपना रानी** 372
किन्नर जीवन का संघर्ष : पोस्ट बॉक्स नं॰ 203 नाला सोपारा/ **डॉ॰ अशोक शामराव मराठे** 375
धर्मवीर भारती का साहित्य-चिंतन/ **डॉ॰ राम किंकर पांडेय** 381

ISSN 0975-735X

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

Scanned with CamScanner

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय

नारी-व्यथा की कथा
प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

डॉ॰ मनोहर आण्यासो जमदाडे
सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
साहेबराव शंकरराव ढमढेरे महाविद्यालय
तळेगाँव ढमढेरे, तहसील-शिरूर (पुणे) 412208 महाराष्ट्र

प्रभा खेतान बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी। उनका जन्म कोलकाता के एक मारवाड़ी परिवार में 1 नवंबर 1942 ई॰ को हुआ था। प्रभा खेतान घर में पाँचवीं संतान थीं। अपने निर्भीक लेखन के कारण वे हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध रही हैं। प्रभाजी ने बचपन से ही कविता लिखना आरंभ कर दिया था। उनकी पहली कविता 1954 ई॰ में 'सुप्रभात' नामक पत्रिका में तब छपी, जब वे सातवीं कक्षा की छात्रा थीं। तब उनकी उम्र महज 12 साल की थी। पढ़ाई और कविताएँ साथ-साथ चलती रहीं। उसके बाद 1989 ई॰ में उनका पहला उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' प्रकाशित हुआ। उसके बाद उपन्यास, अनुवाद, चिंतन, आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' तक अबाध गति से लेखन कार्य चलता रहा। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री के जीवन पर प्रकाश डाला है।

प्रभा खेतान ने अपने जीवन में दुनियाभर की यात्राएँ कीं। नारियों के त्रासदपूर्ण जीवन को अपनी आँखों से देखा है। वे जानती थीं कि अनादिकाल से समाज ने नारी की उपेक्षा की है। उसे हमेशा दोयम स्थान मिला है। पुरुष-प्रधान संस्कृति ने नारी को भाव-भावना, रूढ़ि-परंपरा और मर्यादा में बाँध रखा है। नारी के जन्म से मृत्यु तक भूमिकाएँ बदल जाती हैं, पर शोषण कहीं भी कम नहीं होता है। वह कहीं भी सुरक्षित नहीं है। डॉ॰ उषा कीर्ति राणावत के शब्दों में–'प्रभाजी ने जन्म से लेकर मृत्यु तक पग-पग पर स्त्री जिस यौन उत्पीड़न को झेलती है ऐसे घृणित बलात्कार को स्वयं पर ओढ़कर विवेचित किया है। स्त्री कहीं भी सुरक्षित नहीं है, न घरों में न सड़कों पर।'[1]

'छिन्नमस्ता' सन् 1994 में प्रकाशित प्रभा जी का तीसरा उपन्यास है। कुछ लोग इस उपन्यास को ही उनकी आत्मकथा मानते हैं। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ॰ उषा कीर्ति राणावत लिखती हैं–'छिन्नमस्ता' जिसे प्रारंभ में उनकी आत्मकथा समझ लिया गया। लेकिन यह पूरी कहानी उनकी अपनी आत्मकथा नहीं है। विवाह पूर्व तक की घटनाएँ उनकी अपनी भोगी व्यथा कथा है।'[2] प्रभा खेतान ने 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज में नारी का स्थान और विविध भूमिकाएँ निभाते समय किए जानेवाले उसके शोषण का चित्रण किया है। आज भी भारतीय समाज में बेटी के जन्म पर लोग खुश नहीं दिखाई देते। लड़की के जन्म पर महाप्रलय का अनुभव देखने को मिलता है। 'छिन्नमस्ता' की नायिका प्रिया का जन्म होने पर भी परिवार का कोई सदस्य खुश नहीं दिखाई देता। परिवार में सभी उसकी उपेक्षा करते हैं। यहाँ तक कि स्वयं माँ भी बेटी के प्रति उदासीन रहती है। प्रिया स्वयं कहती हैं–'मुझे कभी अम्मा की गोद की याद भी

ISSN 0975-735X

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
तमसो मा ज्योतिर्गमय

Scanned with CamScanner

नहीं आती है। न मालूम क्यों शुरू से ही अम्मा को मुझसे चिढ़ थी या फिर घोर निराशा की एक प्रतिक्रिया थी, जिसे वे मुझ पर आरोपित कर रही थीं।'[3] यहीं से शुरू हो जाता है नारी के त्रासदपूर्ण जीवन का अध्याय। बचपन से ही उस पर अनेक निर्बंध लगाए जाते हैं।

प्रभा खेतान ने देखा है, अनुभूत भी किया है कि भारतीय समाज में नारी के दुःख की शुरुआत उसके घर से ही होती है। हमेशा उसके दोषों पर प्रहार किए जाते हैं। लड़के की तुलना में लड़की को प्यार नहीं मिलता, सुविधाएँ नहीं मिलतीं। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया को अपनी माँ का प्यार कभी मिला ही नहीं। उसे 'बोकी', 'पत्थर', 'भंगन' आदि उपाधियाँ माँ से मिलती हैं। प्रिया को दाई माँ ने पाला-पोसा। दाई माँ को ही प्रिया अपनी माँ समझती थी। अम्मा हमेशा प्रिया के साथ कठोर व्यवहार करती थीं। एक दिन प्रिया को बुखार आ जाता है तो दाई माँ अम्मा से डॉ॰ गांगुली को बुलाने के लिए कहती है, उत्तर में अम्मा कहती हैं–'तो क्या करूँ? तेरी बेटी तो घोड़े-सी मजबूत है, ठीक हो जाएगी। मुफ्त में आते हैं क्या डॉ॰ गांगुली? फीस नहीं लगती?'[4]

पुरुष की आदिम भूख की प्रवृत्ति समाज के लिए आज खतरा बन गई है। पुरुष की इस पशुता को अच्छी तरह कोई जान सकता है तो वह स्त्री ही है। पुरुष की इस पशुता के कारण भाई-बहन, बाप-बेटी जैसे रिश्ते भी असुरक्षित बन गए हैं। इसी प्रवृत्ति के कारण स्त्री अपने ही घर में पुरुष की वासना का शिकार बनती है। स्वयं प्रिया भी इस हादसे से गुजरती है। इसी घटना को लेकर सुनिता कदम लिखती हैं–'आजकल स्त्री कहीं भी सुरक्षित नहीं है। परिवारों में पिता-पुत्री, भाई-बहन जैसे पवित्र रिश्ते-नातों में वासना का संचार होना, यानी पवित्र रिश्तों की विडंबना होना है। ऐसे परिवार में लड़की का जन्म होना अभिशाप ही है।'[5]

माँ के घर में प्रिया को कभी सुख नहीं मिला। नरेंद्र नामक एक बिजनेसमैन से उसकी शादी होती है। प्रिया का दांपत्य जीवन भी सुखमय नहीं है। नरेंद्र केवल रुपयों से प्यार करता था। औरत उसके लिए उपभोग की वस्तु थी। स्त्री का आदर करना तो मानो नरेंद्र ने सीखा ही नहीं था। प्रिया मन बहलाने के लिए एक्सपोर्ट का काम करने लगती है लेकिन प्रिया का यह स्वावलंबन नरेंद्र को खटकने लगता है। उसके अन्याय से तंग आकर प्रिया कहती है–'कुएँ की भी कोई जमीन होती है. ..पर नरेंद्र की नीचता अंतहीन है, बिना किसी जमीन के।'[6] अपना हक अधिकार जताने में नरेंद्र कभी नहीं चूकता। वह चाहता था कि परिवार के सभी सदस्य उसकी हाँ-हुजूरी करें।

दुनिया में हर पुरुष को अपने पौरुषत्व पर घमंड होता है। इस घमंड के कारण उसमें स्वामित्व का भाव, वर्चस्व की भावना हमेशा बनी रहती है। समाज का हर पुरुष अपनी बीवी पर वर्चस्व रखना चाहता है। पुरुष कभी भी नारी का वर्चस्व स्वीकार नहीं करता। यदि नारी अपने बल पर स्वावलंबी होने लगती है, प्रतिष्ठा प्राप्त करने लगती है तो पुरुष जल उठता है। उसके काम में बाधा पहुँचाने लगता है। 'छिन्नमस्ता' में भी प्रिया का बिजनेस दिन-ब-दिन बढ़ने लगता है तब उसके पति नरेंद्र को ठेस-सी पहुँचती है। अखबारों में प्रिया की तस्वीरें देखकर नरेंद्र जल उठता है। उसकी व्यावसायिक सफलता नरेंद्र को खलती है। वह प्रिया के साथ बखेड़ा खड़ा कर देता है। प्रिया का विदेश जाना नरेंद्र को अच्छा नहीं लगता–'दरअसल, तुम्हें इतनी खुली छूट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे। पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया। तुम्हारे इस भोले चेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है।'[7] अंत में नरेंद्र प्रिया को घर आने से मना कर देता है। बचपन से अपने परिवार में उपेक्षित प्रिया का दांपत्य जीवन भी दुःख, अपमान, तिरस्कार में

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College तमसो मा ज्योतिर्गमय

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College तमसो मा ज्योतिर्गमय

व्यतीत होता है।

प्रिया का तिरस्कार करनेवाली उसकी अम्मा भी कभी सुखी नहीं दिखाई देती। सात बच्चों की माँ बनती है। प्रिया के जन्म के बाद हमेशा बीमार पड़ने लगती है। साथ ही बाबूजी की अचानक मृत्यु होने से उसे बहुत गहरा सदमा पहुँचता है। बाबूजी के जाने से घर की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। ऊपर से दिखावे के सारे आवरणों को, झालरों को सजाकर यथास्थिति बनाए रखने की जी जान से कोशिश में कस्तुरी लगी रहती थी। वह बहुत अकेली हो गई थी। इसलिए निरंतर बातें करती थीं। अम्मा के बदलते स्वभाव पर प्रिया कहती है–'वैधव्य स्त्रियों में हीनभाव ले आता है। अम्मा दिन-पर-दिन और चिड़चिड़ी तथा कुंठित होती जा रही थीं।'[8] परिवार की इज्जत समाज में बनी रहे इस भावना से अम्मा जलती रहती है। पति के अभाव में बेटियों की शादी की चिंता करना, लड़कों के काम में ध्यान देते-देते अम्मा अपनी चिंता भी नहीं करती। फिर भी उसे कभी सुख नहीं मिलता। भारतीय परंपरा के अनुसार पति के अभाव में नारी का जीवन नीरस हो जाता है। विधवा स्त्री किसी उत्सव-समारोह में जाने की अनुमति नहीं होती। प्रिया कहती है–'बाबूजी की मृत्यु के बाद अम्मा ने अपनी जिंदगी को रेगिस्तान बना दिया था। कहीं नहीं जाती थीं, किसी भी जगह नहीं।'[9]

दूसरी ओर प्रिया की सास का अपना अलग दुःख है, पर वह अभिव्यक्त नहीं कर पाती। मिस्टर अग्रवाल तिलोत्तमा नामक लड़की से दूसरी शादी करते हैं। इसलिए पति के प्यार का अभाव मिसेज अग्रवाल को जरूर था। प्रभा खेतान पुरुष की इस विकृति पर खेद व्यक्त करती हैं। पुरुष दो-दो शादियाँ कर अपनी हवस पूरी करता है, लेकिन उस समय स्त्री के हृदय को वह नहीं समझ सकता। इसमें अन्याय तो स्त्री पर ही होता है। मिस्टर अग्रवाल तिलोत्तमा से मिलने जाते, पर मिसेज अग्रवाल पति के अभाव में रात-रात भर रोती थी। उसकी भावनाओं को मिस्टर अग्रवाल नहीं समझ पाते। एक बेटा वह भी अल्हड़ स्वभाव का था। गुस्से में वह माँ को भी गालियाँ देता है। अग्रवाल हाऊस केवल नाम के लिए बड़ा था। पैसा, संपत्ति आदि की बरकत थी। पर परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता की झलक भी दिखाई नहीं देती थी। मिस्टर अग्रवाल का अपना अलग संसार था। उसका बेटा नरेंद्र अपने को परिवार का विश्वकर्मा समझता था। इस घर में मारी जाती थी मिसेज अग्रवाल और प्रिया।

प्रिया की दूसरी सास तिलोत्तमा मिस्टर अग्रवाल के साथ कालीघाट पर जाकर शादी करती है। इस बात से नाराज होकर पिताजी बेटी को घर से निकाल देते हैं। पीहर से नाता हमेशा के लिए टूट जाता है। लेकिन ससुराल में वह सिर ऊँचा कर कहाँ जी पाती है। विवाह के बाद भी मिस्टर अग्रवाल उसे अलग रखैल की तरह रखते हैं। प्रिया अपने आपसे प्रश्न करती है–'छोटी माँ के हिसाब से माँ काली के सामने पापा ने सिंदूर लगाया था। वह विवाह नहीं तो और क्या था?'[10] मिसेज अग्रवाल तिलोत्तमा को हमेशा हीन दृष्टि से देखती हैं। नरेंद्र भी अपनी सौतेली माँ को रखैल ही समझता है। घर में मिस्टर अग्रवाल का भी कुछ नहीं चलता था। जिसकी वजह से तिलोत्तमा अपने जीवन की चिता खुद के हाथों रचती है। अपने घर में पराई हो जाती है। घरवालों की इज्जत तिलोत्तमा की वजह से मिट्टी में मिलती है और खुद बेइज्जती से जीवन जीती है। उसके दुःख का कोई किनारा नहीं था। प्रिया कहती है–'औरत के जीवन में जरा-सा खुरेचो दर्द, पीड़ा और त्रासदी के बहते हुए दरिया मिलेंगे।'[11] तिलोत्तमा की इकलौती बेटी नीना को दुःख विरासत में ही मिल गया। वह

 ISSN 0975-735X

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

कभी अपने नाना के घर जा सकी न पापा के। अपने दु:ख के लिए वह माँ को जिम्मेदार समझती है। वह खुद को नाजायज संतान समझती थी।

अन्याय, अत्याचार, दु:ख-दर्द, केवल भारतीय स्त्री को नहीं सहना पड़ता, बल्कि विश्व में नारी के साथ यही होता आया है। 'छिन्नमस्ता' की जुडी के कथन से विश्व में नारी की स्थिति का पता चलता है–'सुनो, जिंदगी को फिर से शुरू करने के लिए, जिंदा रहने के लिए असीम साहस और धैर्य की जरूरत है। हम पश्चिमी स्त्रियों ने भी बहुत सहा है। जब हमारे घर उजड़े, बच्चों ने साथ छोड़ा, साठ वर्ष का पुरुष केवल पैसे के बल पर बीस वर्ष की लड़की के लिए घूमने लगा, तब हम भी तिलमिला उठीं। भोग का नंगा नाच और उसमें शामिल हमारी ही बहनें और बेटियाँ थीं। आज कम-से-कम मुझे पता है कि इलोना एक व्यक्ति की तरह सोचती है, अपने निर्णय खुद लेती है।'[12]

निष्कर्षत: प्रभा खेतान ने 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के माध्यम से नारी के संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला है। पुरुष-प्रधान संस्कृति के कारण बचपन से स्त्री-पुरुष में भेद दिखाई देता है। जन्म से उसका संघर्ष शुरू होता है और अंतिम साँस तक चलता रहता है। परिवार में भी उसे अपने हिस्से का प्यार नहीं मिलता। मिलता है, तो केवल अपमान। पिता के घर से शुरू हुआ उसका संघर्ष, पति के घर आकर भी खत्म नहीं होता। अनादिकाल से चला आ रहा यह संघर्ष आज भी जारी है।

संदर्भ

1. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ॰ उषा कीर्ति राणावत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 129
2. वही, पृ॰ 48
3. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1997, पृ॰ 27
4. वही, पृ॰ 51
5. राष्ट्रवाणी : जनवरी फरवरी 2009, पृ॰ 36
6. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1997, पृ॰ 166
7. वही, पृ॰ 11
8. वही, पृ॰ 45
9. वही, पृ॰ 51
10. वही, पृ॰ 195
11. वही, पृ॰ 144
12. वही, पृ॰ 186

मो॰ 9922070963

ई मेल mjamdade@ymail.com

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist Pune-412 208

Scanned with CamScanner